वार्तालाप सीडी नं.487, दिनांक 9.1.08, नागपुर (महाराष्ट्र)
Disc.CD No. 487, dated 9.1.08 at Nagpur (Maharashtra)

समयः 0-9.40
जिज्ञासुः मेरे मन के अन्दर बार-बार यह संकल्प उठता है कि बाबा जब माउंट आबू में जायेंगे तो मैं भी बाबा के साथ-साथ जाऊंगा। ये संकल्प उठने का कारण क्या है बाबा?
Time: 0-9.40
Student: A thought comes to my mind repeatedly: when Baba goes to Mt. Abu, I too will go along with Him. What is the reason for the emergence of this thought Baba?

बाबाः अच्छा संकल्प उठता है तो पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किये होंगे। हैं? अगर किसी के बार-बार निगेटिव संकल्प उठते हैं, रील में निगेटिविटी आती है, चाहे ब्रह्मा हो चाहे ब्राह्मण हों। ब्रह्मा के सत्संकल्पों से स्वर्ग की सृष्टि रची गई। तो ब्राह्मणों के भी अच्छे संकल्पों से क्या होगा? उनके जन्म जन्मान्तर की अच्छी सृष्टि रची जाती है। तो वर्तमान में किसी के अगर अच्छे संकल्प चलते हैं कि मैं बाबा के साथ ही रहूं, हं, तो सिद्ध होते हैं कि नहीं?
Baba: If a good thought arises then you must have performed noble acts in the past birth. Hum? If negative thoughts arise in someone's mind repeatedly, if negativity emerges in the reel, whether it is Brahma or Brahmins; heaven was created through the good thoughts of Brahma. So, what will happen through the good thoughts of the Brahmins as well? A good world is created for them for many births. So, if good thoughts emerge in someone's mind at present: I should live only with Baba, hum, then do they fructify or not?

जैसे कुमारका दादी के संकल्प थे। मैं भविष्य में बाबा की वारिसदार बनूंगी। तो ज्ञान के अनुसार सिद्ध हो गया ना कि सतयुग का सेकण्ड नारायण कौन बनेगा? हैं? दादी ही बनेगी। अगर अंत तक संकल्प पक्का रहा तो। परन्तु क्या ये संकल्प ज्ञानयुक्त कहें? कि ब्रह्मा बाबा के वारिसदार बनेंगे? क्योंकि मुरली में तो बोला हुआ है – मैं तुम बच्चों को नर से नारायण बनाता हूँ, नारी से लक्ष्मी बनाता हूँ। और ब्रह्मा बाबा क्या बनेंगे? नर से? (सबने कहा – प्रिंस) प्रिंस बनेंगे। फिर नारायण बनेंगे। तो एक डिग्री कम हो गई ना। और फिर ब्रह्मा बाबा के जो वारिसदार बनेंगे उनकी तो और कलाएं कम हो जायेंगी।
For example, there was a thought in the mind of *Kumarka Dadi*: I will become Baba's heir in the future. So, as per knowledge, it has been proved that who will become the second Narayan in the Golden Age, hasn't it? Hum? Indeed *Dadi* will become (the second Narayan), if her thought remains firm till the end. But is this thought: a knowledgeable thought; that I shall become the heir to Brahma Baba? Because it has been said in the *Murli* – I transform you children from a man to Narayan, from a woman to Lakshmi. And what will Brahma Baba become from a man? (Everyone said – Prince) He will become a Prince. Then he will become Narayan. So, one (celestial) degree was reduced, wasn't it? And then there will be further reduction in the celestial degrees of the one who will become the heir of Brahma Baba.

तो जो भी संकल्प करें, संकल्प करने से पहले ये पक्का करें, ये संकल्प श्रीमत के अनुकूल है? श्रीमत कहती है – बाप के घर जाना है। और घर में जाके बैठ जाना है या तुरंत वापस भी आना है? (किसी ने कहा – बैठ जाना है) इतना संकल्प तो किया कि बाप के घर परमधाम, शांतिधाम जाना है। लेकिन इतने से ज्ञान पूरा हो जाता है? क्योंकि परमधाम में तो बाप के पीछे-पीछे जाने वाली ढ़ेर आत्माएं जाके बैठ जायेंगी। क्या? कितने बैठेंगे? ५०० करोड़ जाकर बैठेंगे।

So, whatever thought we may make; before making a thought we should make it sure, whether this thought is in accordance with *shrimat*? *Shrimat* says – we have to go to the Father's home. And do we have to go home and just sit or do we have to come back immediately as well? (Someone said – we have to sit) We did make a thought that we have to go the Father's home, i.e. the Supreme Abode, the abode of peace. But does the knowledge become complete just with this? Because a lot of souls will follow the Father to the Supreme abode and sit there. What? How many will sit there? 500 crore (5 billion) souls will go and sit.

इस सृष्टि पर जो साकार परमधाम बनेगा उसमें इस सृष्टि की जो भी बीज रूप आत्माएं हैं लाखों की तादाद में, वो सब जाकरके बैठेंगी। लेकिन वहां जाकरके बाप के पीछे-पीछे बैठना ही बड़ी बात है या कोई और भी बात है, जो लक्ष्य की पूर्ति करने के लिए जरूरी है? क्या है? (किसी ने कहा – सुखधाम भी जाना है) हां, सिर्फ परमधाम ही नहीं जाना है, वहां जा करके बैठ ही नहीं जाना है परंतु पहले-पहले सुखधाम में भी आना है। जैसे मनुष्य सृष्टि का बाप शिव बाप के पीछे-पीछे परमधामवासी बनता है। शिव बाप तो साक्षी हो जाता है। परमधामवासी हो जाता है, ५००० वर्ष के लिए और मनुष्य सृष्टि का बाप वहां बैठ जाता है या तुरंत वापस आता है? सुखधाम में वापस आता है।

All the seed-form souls of this world, numbering in lakhs will go and sit in the corporeal Supreme Abode that will be created in this world. But is it a big deal to follow the Father and just sit or is there any other subject too which is necessary to fulfill the goal? What is it? (Someone said – We have to go to the abode of happiness as well) Yes, we have to go not just to the Supreme Abode, we have to not just go and sit there, but we have to come first to the abode of happiness as well. For example, the father of the human world becomes the resident of the Supreme Abode following the Father Shiv. The Father Shiv becomes a detached observer (*saakshi*), He becomes a resident of the Supreme Abode for 5000 years and does the father of the human world sit there or does he come back immediately? He comes back to the Abode of happiness.

ऐसे ही जो बोला है कि तुम बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे। तो परमधाम इस सृष्टि पर उतरेगा। बाप भी होगा बच्चे भी होंगे लेकिन वो बच्चे श्रेष्ठ कहे जावेंगे जो परमधाम पहुंचे, शांतिधाम का गेट खुला और साथ ही कहां पहुंच गये, क्योंकि शांतिधाम का गेट खुलने के साथ-साथ सुखधाम का भी गेट खुलेगा। तो जो सुखधाम में भी तुरंत वापस आ जावें, सिर्फ रुद्र माला के मणके बनके ही नहीं रह जावे, लेकिन विजयमाला में भी सुखधाम

में आके पिरोना है। तब लक्ष्य की पूर्ति होगी। नहीं तो वो शंकराचार्य, वो सन्यासी, वो दूसरे धर्म की आत्माएं, वो सिर्फ मुक्ति पाती हैं। जीवनमुक्ति नहीं पाती। और हमारा लक्ष्य क्या है? हमारा मार्ग प्रवृत्तिमार्ग का है। हमारी याद भी प्रवृत्तिमार्ग की है। क्योंकि हम सिर्फ निराकार को याद नहीं करते। क्या याद करते हैं? (किसी ने कहा – साकार में निराकार) साकार में निराकार को याद करते हैं। याद भी प्रवृत्तिमार्ग की है और हमारी प्राप्ति भी प्रवृत्ति मार्ग की है।

Similarly, it has been said that you children will bring the Supreme Abode down to this world. So, the Supreme Abode will come down to this world. The Father will be present there as well as, the children will be present; but those children will be called the elevated ones, who reach the Supreme Abode; and where will they reach as soon as the gate of the Abode of the peace opens? Because with the opening of the gate of the abode of peace, the gate of the abode of happiness will open as well. So, those who come back to the abode of happiness immediately, those who do not just remain the beads of the rosary of *Rudra*, but they have to be threaded in the rosary of victory *(Vijaymala)* after coming to the abode of happiness too, it is then that the goal will be fulfilled. Otherwise, that *Shankaracharya*, those *sanyasis*, the souls of other religions, they achieve just *mukti* (liberation). They do not achieve *jeevanmukti* (liberation from pain and sorrow). And what is our goal? Ours is a path of household. Our remembrance is of the path of household as well because we don't remember just the incorporeal. What do we remember? (Someone said – incorporeal within the corporeal) We remember the incorporeal within the corporeal. The remembrance is of the path of household as well as our gain is of the path of household.

हमें सिर्फ मुक्ति नहीं चाहिए। मुक्ति के साथ जीवनमुक्ति भी चाहिए। तो शांति भी और सुख भी चाहिए। ऐसी तो कोई आत्मा नहीं होगी जो न शांति चाहती हो न सुख चाहती हो। कोई आत्मा है? हैं? अगर है तो वो आत्माओं की लिस्ट में नहीं है। किस लिस्ट में है? हैं? परमपिता परमात्मा है एक। वो सदैव शांतिधाम का वासी है। उसे सुख की आशा नहीं है। जिनको शरीर होता है उनको सुख भी होता है। तो संकल्प सिर्फ ये ही नहीं करना है कि हमें बाप के साथ जाना है। लेकिन क्या करना है? बाप के साथ जाना भी है और तुरंत सुखधाम में आना भी है। रूद्र माला के मणके बन गये, बीजरूप आत्मा बन गए, शांतिधाम में तो पहुंच गये, पहले पहुंच गये। फिर सुखधाम में अगर बाद में आए तो नंबर तो पीछे रह जावेगा। श्रेष्ठ देवताओं की लिस्ट में आवेंगे या बाद वाले देवताओं की लिस्ट में आवेंगे? ये तो बाद की लिस्ट बन जावेगी।

We don't want just *mukti*. We also want *jeevanmukti* along with *mukti*. So, we want peace as well as happiness. There will not be any soul who wants neither peace nor happiness. Is there any soul? Hum? If there is any such soul then it is not in the list of souls. In which list is it? Hum? The Supreme Father Supreme Soul is the one. He is forever a resident of the abode of peace. He does not desire happiness. Those who have a body also desire happiness. So, we should not just make this thought: we have to go with the Father. But what do we have to do? We have to go with the Father as well as we have to come back to the abode of happiness immediately. We became the beads of the rosary of *Rudra*, we became seed-form souls, we did reach the abode of peace, we reached first. Then if we come to the abode of happiness

later on, then we will lag behind in the number. Will we be included in the list of the righteous deities or in the list of the latter deities? That will become a late list.

समयः 14.20-14.58

जिज्ञासुः सेवा के प्रति गीता पाठशाला के अन्दर बाबा के बोले गए महावाक्य बोर्ड बनाकर लिखकर रखना यह ठीक है कि गलत है?

बाबाः बाबा के महावाक्य तो लिखना अच्छा ही है। लेकिन चुन-चुन करके वजनी प्वाइंट लिखे तो ज्यादा अच्छा है क्योंकि नए-नए आने वाले स्टूडेन्ट्स के लिए बाबा तो पुरानी-पुरानी प्वाइन्ट्स ही बोलते रहते हैं। सामान्य प्वाइन्ट्स भी बोलते-रहते हैं।

Time: 14.20-14.58

Student: Is it right or wrong to write the versions said through Baba on a board and display it in the *Gitapathshala* for the purpose of service?

Baba: It is certainly good to write the versions of Baba. But it is better if we select important points and write because Baba keeps narrating the old points for the sake of the new students. He also keeps narrating general points.

समयः 14.59-16.06

जिज्ञासुः बाबा बोलते हैं कि विजयमाला का आवाहन करो। बाबा संकल्प करना है कि किस प्रकार का संकल्प करना है? थोड़ा डीटेल में बताइये।

बाबाः अगर बोला जाए शहद की मक्खियों का आवाहन करो तो क्या करेंगे? शहद की मक्खी पालने वाले होते हैं वो सारी मक्खियों का आवाहन करते हैं या रानी मक्खी को उठा लेते हैं? (किसी ने कहा – रानी मक्खी को उठा लेते हैं) रानी मक्खी का आवाहन करेंगे तो सारी मक्खियां खुद ही आ जावेंगी। मुरली में भी बोला है। मिसाल यहां का दिया है। शहद की मक्खियों की एक रानी मक्खी निकलती है तो पीछे-पीछे सारा झाड़ जाता है।

Time: 14.59-16.06

Student: Baba says: we should invoke the rosary of victory. Baba should we make thoughts or what kind of thoughts should we make? Please tell in detail.

Baba: If you are asked to invoke the honeybees, what will you do? Do those who rear honeybees invoke all the honeybees or do they pick up just the queen bee? (Someone said – they pick up the queen bee) If you invoke the queen bee, then all the bees will automatically come. It has also been said in the *Murli* too. The example has been taken from here. When the one queen bee of the honeybees emerges then the entire swarm follows her.

जिज्ञासुः किस प्रकार का आवाहन करना है बाबा?

बाबाः अव्यक्त बापदादा का आवाहन करते हैं तो किस प्रकार का आवाहन करते हैं? हैं? पता नहीं? क्या बेसिक में पढ़ाई पढ़ी नहीं? (जिज्ञासु – बेसिक में गये नहीं, डायरेक्ट) डायरेक्ट आ गये। इसलिए।

Student: How should we invoke (her) Baba?
Baba: When you invoke *Avyakta* Bapdada, how do you invoke him? Hum? Don't you know? Did you not study the basic knowledge? (Student – I did not go to the basic knowledge; I came directly) You came directly. That is the reason (for not knowing how to invoke).

समयः 24.42-27.25

जिज्ञासुः पुरुषोत्तम संगमयुग की शूटिंग का समय है। सतयुग की शूटिंग का समय तो हो चुका है। हम लोग तो नहीं थे उस समय।

बाबाः यहां जो भी बैठे हुए हैं, उनमें कोई ऐसा है जिसकी उमर ७१ साल से भी ऊपर हो। हैं? कितनी है? (किसी ने कहा – ७३) छिहत्तर। (किसी ने कहा – ७३) तिहत्तर। सेवेन्टी थ्री। और कोई? कितनी है? (किसी ने कहा – ७५) पिचहत्तर। और कोई? बस? तो इतनी बड़ी सभी में दो आत्माएं ऐसी हैं जो यज्ञ के आदि में ब्राह्मण नहीं थी। और बाकी सब ब्राह्मण थे। सिंध, हैदराबाद में मौजूद थे। दुनिया की आबादी, दुनिया की आबादी, नई दुनिया के आदि में माना सतयुग के आदि में कितनी होती है? ९ लाख। और सिंध, हैदराबाद की भी आबादी कितनी थी? ९ लाख थी।

Time: 24.42-27.25

Student: It is the time for the shooting of the *Purushottam Sangamyug* (elevated Confluence Age). The time of the shooting of the Golden Age has passed. We were not present at that time (of the shooting of the Confluence Age).

Baba: Among all those who are sitting here, is there anyone whose age is more than 71 years? What is the age? (Someone said – 73) Seventy six. (Someone said – 73) Seventy three. Anyone else? What is your age? (Someone said – 75) Seventy five. Anyone else? Is that all? So, in such a big gathering, there are just two souls who were not Brahmins in the beginning of the *yagya*. And the rest of all the others were Brahmins. They were present in *Sindh, Hyderabad*. In the beginning of the new world, i.e. in the beginning of the Golden Age what is the population of the world? 9 lakhs (900 thousands). And what was the population of *Sindh, Hyderabad* (in 1936-37) as well? It was 9 lakhs.

अब जो ७०-७१ साल से पहले के बैठे हुए हैं यहां वो कहेंगे अगर हम यज्ञ के आदि में थे ही नहीं ब्राह्मण तो हम यहां एडवान्स में कैसे आ गए? इसका जवाब है आपके पास? नहीं है। तो जवाब है – कुछ आत्माएं ऐसी हैं जो राम वाली आत्मा के साथ पूर्व जन्म में रही थी। लेकिन जब यज्ञ शुरु हुआ तब नहीं थी। इसलिए पूर्व जन्म के संग के रंग के वो संस्कार स्वभाव उनको एडवांस में खींच लेते हैं।

Well, those sitting here with an age of more than 70-71 years will say: if we were not at all Brahmins in the beginning of the *yagya*; so how did we come to the advance knowledge? Do you have the reply for this question? You don't have it. So, the answer is – there are some such souls who had lived with the soul of Ram in the past birth. But they were not there the *yagya* had begun. That is why those *sanskars* and nature of being colored in the company (of the soul of Ram) in the past birth pulls them in the advance knowledge.

समयः 27.26-28.45

जिज्ञासुः बाबा, पोतामेल के अन्दर एक कालम है। बाबा को याद कितना समय किया? अब उसकी केल्कुलेशन (गणना) तो मुश्किल ही लगता है। कैसे करना है, जैसे सुबह उठने समय धंधा धोरी शुरू ही रहती है। तो इसका केल्कुलेशन करना बहुत कठिन है। किस तरीके से करना है?

दूसरा जिज्ञासुः दैनिक चार्ट में।

Time: 27.26-28.45

Student: Baba, there is a column in (the proforma for) *potamail.* How much time did you remember Baba? Well, its calculation (counting) appears to be difficult. How should we do it? For example, the household chores begin as soon as we wake up. So, its calculation is very difficult. How should we do it?

Second student: In the daily chart (not *potamail*).

बाबाः जो दैनिक चार्ट रात को सोते समय ५ मिनट लिखा जाता है। उसमें याद के बारे में कम से कम इतना तो लिख सकते हैं कि फर्स्टक्लास याद रही, सेकेण्ड क्लास रही, थर्ड क्लास याद रही। टूट-टूट के याद आई या कभी-कभी निरंतर स्मृति बनी रही? अनुभव तो होता है? तो जैसा भी अनुभव होता है वैसा लिख दो।

जिज्ञासुः उसमें बाबा एक कालम है कितना कमाया और कितना खाया। तो वो बेहद में बोला है कि ....

बाबाः बेहद में तों सारा ही चार्ट है। लेकिन वो हद का चार्ट है कि कमाते कितना है और खाते कितना है। ऐसा तो नहीं कमाते कम हैं और घर परिवार वालों का ले लेके खाते रहते हैं? तो संस्कार पड़ जावेंगे उधार लेकरके खाने के।

Baba: The daily chart that is written for five minutes before going to sleep, you can at least write about remembrance in it: whether the remembrance was first class, second class or third class. Were there gaps in the remembrance or was the remembrance continuous sometimes? You do experience, don't you? So, whatever you experience, write accordingly.

Student: Baba, in that there is a column: how much did you earn and how much did you spend (on eating). So, has that been said in an unlimited sense or ....

Baba: The entire chart is in the unlimited sense. But that one is a limited chart in which (you have to write): how much do you earn and how much do you spend (on eating). Whether is it the case that you earn less and keep taking from the (portion of) members of the family and eat? So, you will develop *sanskars* of living on debts.

समयः 28.48-35.50

जिज्ञासुः आखिर ५-७ रोज, २०३६ में आखिर ५-७ रोज़ के अन्दर महाविनाश होगा। तो इसमें जब धरती हिलेगी तब माउंट आबू पर बाबा बच्चे होंगे या पहले ही वैकुण्ठ में चले जायेंगे?

बाबाः ३६ के बाद जो रह जावेंगे तो वो सतयुग के आदि में आयेंगे? हैं? २०३६ के बाद संगम तो पूरा हो जाता है। और संगम जब पूरा हो गया, फिर पुरुषार्थ का टाइम रहता है क्या? वैसे

भी उस समय जो निकलने वाली होगी वो प्रजा वर्ग की आत्माएं होंगी या वारिस क्वालिटी की आत्माएं तब तक पुरुषार्थ करती रहेंगी? प्रजावर्ग की आत्माएं होंगी।

Time: 28.48-35.50

Student: The mega-destruction will take place during the last 5-7 days in 2036. So, when the Earth will shake during this period, then will Baba and children be present at Mt.Abu or will they have already gone to heaven?

Baba: Will those who survive after (20)36 come in the beginning of the Golden Age? Hum? The Confluence Age completes after 2036. And when the Confluence Age is over, does any time for making special effort for the soul remain? Even so, will the souls that emerge at that time be the ones belonging to the category of subjects or will the heir-quality souls continue to make special effort for the soul till then? They will be souls belonging to the category of subjects.

तो सन् ३६ के बाद या सन् ३६ के आस-पास दुनिया का एक-एक अणु दुनिया की एक-एक मनुष्यात्मा और दुनिया की प्रत्येक आत्मा, कीड़ा-मकोड़ा, पशु-पक्षी, पतंगा इनकी भी तो आत्माएं है ना। वो आत्माएं जहां से चलना शुरू हुई थी अपना साइकिल पूरा करके फिर वहीं उसी स्थान पर पहुंचेंगी। इसलिए २०३६ के बाद न तो माउंट आबू का पहाड़ ही रहेगा और न ये दुनिया रहेगी। हां, ये कह सकते हैं कि आबू का जो पहाड़ है, नाम क्या रखा? हैं? आ बू।

So, after (20)36 or around (20)36, every atom of the world, every human soul of the world and every soul of the world; there are souls of insects and spiders, animals and birds, moths too, are there not? Those souls, after completing their cycle, will reach the same place from where they commenced their cycle. This is why, after 2036 neither the mountain of Abu will remain nor will this world remain. Yes, we can say that the mountain of Abu; what has it been named as? *'Aa', 'boo'*.

दुनिया के जो राजाएं हुए हैं या जो राजपरिवार हुआ है उन राजाओं ने दुनिया में द्वापर कलियुग में आकरके ज्यादा गंद की है। प्रजा ने उतनी गंद नहीं की है। तो वो सारी गंद राजपरिवार की जो बहुत ही गंदे हो गये हैं वो गंदगी का पहाड़ जाकरके वहां इकट्ठा होता है। कहां? माउंट आबू। उसमें भी कैटागरीज हैं। थर्ड क्लास वारिसदार भी हैं। दास-दासी बनने वाले भी हैं। छोटे-मोटे प्रिंस बन करके रह जाने वाले भी हैं। युवराज बनने वाले भी हैं। जो पहला प्रिंस बनते हैं। राजाएं बनने वाले भी हैं और महाराजा बनने वाले भी हैं। रानियां और महारानियां बनने वाले भी हैं। उस राजपरिवार की टोटल संख्या कितनी है? हैं? ९ लाख प्रजा नहीं है ९ लाख? (किसी ने कहा – १६०००) १६१०८. वो १६१०८ वो सारी की सारी आत्माएं कलियुग के अंत में आकरके पतित बन जाती हैं। यथा राजा तथा उनकी ९ लाख प्रजा भी क्या बन जाती है? पतित बन जाती है। तो माउंट आबू – वो यादगार है पत्थरबुद्धियों की।

The kings or royal families that have existed in the world in the past, those kings have spread more dirt (i.e. vices) in the world after coming in the Copper and Iron Ages. The subjects have not spread so much dirt. So, all that dirt of the royal family, who have become very dirty, that mountain of dirt collects over there. Where? At Mount Abu. There are categories among them too. There are third class heirs as well there are those who become maids and

servants. There are those who will just become small princes as well as there are those who become crown princes, who become first princes. There are those who become kings as well as those who become emperors. There are those who become queens and empresses as well. What is the total number of that royal family? Hum? Is it 9 lakh, aren't the subjects (included) in those 9 lakh? (Someone said – 16000) 16108. All those 16,108 souls become sinful at the end of the Iron Age. Like their Kings, what do their 9 lakh subjects become too? They become sinful. So, Mt. Abu is a memorial of those with a stone-like intellect.

जो भी पत्थर होते हैं या पत्थर के पहाड़ होते हैं उनमें सबसे ज्यादा मजबूत पत्थर कौनसा होता है? ग्रेनाइट। काला पत्थर। वो काला पत्थर का बहुत गहरा पहाड़ माउंट आबू नाम है उसका। मोस्टली उस पत्थर के कलियुग के अंत में शिवलिंग बनाये जाते हैं। तो अंत में कौनसा पत्थर टूटेगा? छोटे-छोटे सालिग्राम टूटेंगे या वो बड़ा शिवलिंग का पत्थर टूटेगा? अंत में वो बड़ा पत्थर टूटेगा। कारण ये है कि वो बाप का पार्ट है। जो भी बच्चे हैं सबका उद्धार होने के बाद बाप का नम्बर आता है। तो माउंट आबू में लास्ट तक बाप का पार्ट है जो सब बच्चों को सूक्ष्म वतन भेज करके अंत में फिर जावेगा। और उसकी इतनी फास्ट गति होगी कि बच्चे परमधाम में बाद में पहुंचेंगे नम्बरवार, पहले बाप पहुंच जावेगा। ये याद की प्रैक्टिस की बात है। इसलिए अव्यक्त बापदादा कहते हैं ऐसी प्रैक्टिस करो कि एक सेकण्ड में साकारी एक सेकण्ड में आकारी एक सेकण्ड में निराकारी।
Among all the stones, or the mountains of stone, which is the strongest stone? Granite. The black stone. The name of the very deep (rooted) mountain of the black stone is Mount Abu. At the end of the Iron Age mostly the *Shivlings* are made up of that stone. So, in the end which stone will break? Will the small *Shaligrams* break or will the big *Shivling* stone break? In the end the big stone will break. The reason is that it is the Father's part. The father's number comes after the all the children are uplifted. So, the father's part is till the last period in Mt.Abu who himself will go to the subtle world in the end after sending all the children first. And his speed will be so fast that the children will reach the Supreme Abode later on number wise; the father will reach first. This is a topic of the practice of remembrance. That is why *Avyakta Bapdada* says: Make the practice of becoming corporeal in a second, subtle in the next second and incorporeal in the third second.

समय – 16.08
जिज्ञासु – बाबा, बाबा बोलते है कि 2018 में कृष्ण का जन्म, हम समझते थे बाबा कि स्थूल में दादा लेखराज ब्रह्मा का ही कृष्ण के रूप में जन्म होगा। तो ये बात नहीं है ना बाबा? ये संगमयुगी कृष्ण की बात है क्या बाबा?
Time: 16.08
Student: Baba says that in the year 2018, the birth of Krishna will take place. Baba, we used to think that, the physical birth of Dada Lekhraj Brahma himself will take place in the form of Krishna. So, Baba, it isn't so, is it? Baba, is it about the Confluence Age Krishna.

बाबा – स्थूल दुनिया कब शुरू होगी? और ये ब्राह्मणों की जो सूक्ष्म दुनिया है, वो स्थूल दुनिया कहेंगे या संकल्पों के पावर से रची हुई सूक्ष्म दुनिया कहेंगे? अभी तो सूक्ष्म दुनिया है। ब्राह्मणें की। सुक्ष्म संकल्पों की पावर से संगठन तैयार हो रहा है। ब्राह्मणें की नई दुनिया

का संगठन बन रहा है। यहाँ जो कुछ भी होता है, उसका शास्त्रों में गायन होता है। सतयुग, त्रेता में जो कुछ होगा उसका शास्त्रों में कोई गायन नहीं है।
Baba : When will the physical world begin? And this subtle world of Brahmins, will it be called the physical world or will it be called the subtle world created through the power of thoughts? Now, it is a subtle world of Brahmins. The *sangathan* (gathering) is being formed through the power of subtle thoughts. The gathering of the new world of the Brahmins is being created. Whatever takes place here is praised in the scriptures. Whatever that will happen in the Golden Age and the Silver Age is not praised in the scriptures.

तो राधा–कृष्ण जो पैदा होते है, सतयुग में। वो स्थूल दुनिया होगी या ब्राह्मणें की सूक्ष्म दुनिया होगी? वो तो स्थूल दुनिया होगी। उस स्थूल दुनिया में राधा–कृष्ण के साथ कंसी–जरासिंधी शास्त्रों में नही दिखाए गए है। शास्त्रों में जिन राधा–कृष्ण के साथ कंसी–जरासिंधी दिखाए गए है, वो संगमयुगी दुनिया के कृष्ण की बात है।
So, Radha and Krishna who take birth in the Golden Age, will it be a physical world or will it be the subtle world of Brahmins? It will be a physical world. In that physical world, *Kansa* and *Jarasindih* (demonic characters in the epic Mahabharat) have not been shown along with Radha and Krishna in the scriptures. Kansa and Jarasindhi who have been shown along with Radha and Krishna in the scriptures, it is about Krishna of the Confluence Age world.

जिज्ञासु – प्रत्यक्षता रूपी जन्म?
बाबा – प्रत्यक्षता रूपी जन्म की बात है। यहां स्थूल जन्म तो होना ही नहीं है।
जिज्ञासु – और 2036 में फिर स्वयंवर बोला है ना बाबा?
Student: Is it revelation-like birth?
Baba: It is about revelation-like birth. The physical birth will not at all take place here.
Student: And Baba, in the year 2036, it has been said that the *Swayamvar* (public choice of a bridegroom by the bride from among the assembled suitors) will take place, hasn't it?

बाबा – 2036 में जो स्वयंवर की बात बताई गई है। स्वयंवर शास्त्रों की बात है या कोई प्रैक्टिकल बात है? और शास्त्रों में जो भी बातें स्वयंवर की आई हुई है, वो संगमयुगी दुनिया की यादगार है या सतयुग, त्रेता की यादगार है? (किसी ने कहा – संगमयुग की।) तो संगमयुगी दुनिया में स्वयं जिन्होंने वरण किया है। उसकी यादगार में स्वयंवर हुआ है। सतयुग में न कोई जश्न होता है, न कोई उत्सव होता है और न कोई वहां त्यौहार होता है।
Baba: The topic about S*wayamvar* in 2036 which has been mentioned, (so) is *Swayamvar* something mentioned in the scriptures or is it any practical thing? And whatever has been mentioned about *Swayamvar* in the scriptures, is it a memorial of the Confluence Age world or is it a memorial of the Golden Age and the Silver Age? (Someone said – It is about the Confluence Age). So, those who have themselves chosen (their partner) in the Confluence Age world, its memorial is the *Svayamvar*. There are neither functions nor festivals in the Golden Age.

समय – 36.12
जिज्ञासु – सव्वा दो लाख (2.25 लाख) जो है वो कौनसी स्टेज को धारण करती है?
बाबा – कौनसे 2.25 लाख?
जिज्ञासु – सूर्यवंशी घराने में जो 2.25 और 2.25 (मिलाकर) 4.5 लाख (आत्माऐं) होती है ना?

Time – 36.12
Student: Which stage do the 2.25 lakh (225 thousand) (souls) acquire?
Baba: Which 2.25 lakh (souls)?
Student: The 2.25 lakh plus 2.25 lakh souls, (totally) the 4.5 souls that are there in the family of the Sun dynasty *(Suryavanshi)*, aren't they?

बाबा – 2.25 लाख चंद्रवंशी – विजयमाला से आने वाले। और 2.25 लाख सूर्यवंशी। जो असल सूर्यवंशी है, ज्ञान सुर्य की औलाद, जो सूर्य से डायरेक्ट ज्ञान लेते है, उनकी क्षिप्र गति है। क्योंकि वो निराकारी स्टेज को झट धारण कर लेते है। और बाकी जो 2.25 लाख है रानियाँ बनने वाली, वो निराकार उपासी नहीं है। क्या है? साकार उपासी है।
Baba : There are 2.25 lakh (souls) who come from Vijaymala (the rosary of victory). And there are 2.25 lakh (souls) of the Sun dynasty. Those who are real *Suryavanshis*, the offspring of the Sun of knowledge, those who take knowledge directly from the Sun, are of a swift nature because; they imbibe the incorporeal stage soon. And the rest of the 2.25 lakh (souls) who are going to become queens are not the worshipers of the incorporeal. What are they? They are the worshippers of the corporeal one.

चरित्रवान है या रूद्रमाला के 2.25 लाख मणकों के मुकाबले दुश्चरित्र है? (किसी ने कहा – चरित्रवान है।) जो रानियाँ है वो जन्म–जन्मांतर की चरित्रावान है। इसलिए उनको बीज–रूप स्टेज धारण करने में ज्यादा टाइम नहीं लगता। जो राजा बनने की क्वालिटी वाली आत्माऐं है, वो ज्यादा पतित बनी हे जन्म–जन्मांतर। इसलिए उनकी पढ़ाई भी पहले चालू होती है। और उनको ज्यादा प्रैक्टिस करनी पड़ती है। तो नैचुरल पवित्र आत्माऐं कौनसी मानी जावेंगी? (किसी ने कहा – विजयमाला) विजयमाला वाली आत्माऐं नैचुरल पवित्र है। इसलिए उनको ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। वो बाद में आती है तो भी प्रैक्टिकल जीवन में फास्ट जाती है।
Are they of a good character or are they characterless as compared to the 2.25 lakh (225 thousand) beads of the rosary of *Rudra*? (Someone said – They are of good character). The queens are of a good character for many births. That is why, it doesn't take much time for them to attain seed-form stage. The souls who have a quality of becoming kings have become impure for many births. That is the reason why their study begins first as well as they have to practice more. So, who will be considered as the natural pure souls? (Someone said – *Vijaymala*). The souls belonging to the Vijaymala are naturally pure. Hence, they don't have to make much effort. They come later, yet they go fast in their practical life.

जिज्ञासु – तो ऊंचा किसको कहेंगे बाबा?
बाबा – ऊंचा तो बाप के बच्चे ही है। विजयमाला आती है चंद्रवंशियों से।
जिज्ञासु – विजयमाला ऊंची होती है या.......................
बाबा – वो ऊंची तब कही जाए जब एडवान्स ज्ञान लेले।
Student: So, who will be said to be superior (between Vijaymala and Rudramala)?
Baba: The superior ones are certainly the children of the Father. The *Vijaymala* (souls) come from the Moon dynasty *(Chandravansh)*.
Student: Is *Vijaymala* superior or…………..
Baba: They will be said to be superior when they have taken the advance knowledge.
………………………………………………………………………………
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.